जाहेर खबर।

निवेदन है कि अगर आप लोग स्वल्प परिश्रम द्वारा जैन सिद्धान्तोंका तत्त्वज्ञान प्राप्त करना चाहते हो तो इन पुस्तकोंको अवश्य पढ़िये। बहोत कम नकलें सिलकमें हैं।

शीघ्रबोध अथवा थोकडा प्रबन्ध भाग १-२-३-४-५-६-७-८-९-१० इन्ही दश भागोंमें कुल थोकडा ११५ है, छपानेका खरचा रु० २) होने पर भी ज्ञानवृद्धिके लिये किंमत रु० १) रखी है, जल्दी मगा लीजिये।

हिन्दी टैप अच्छा बढिया कागज सुन्दर टाइप्स मय तीन-निर्नाना ऐसौका उत्तर सहित कागद, हुंडी, पेठ, परपेठ, और महार नामा किंमत आठ आना

सात पुरोंका गुच्छा द्रव्यानुयोग प्रथम प्रवेशिका नन्दी सूत्र मूलपाठ दशवैकालिक सूत्र मूलपाठ	≈) डाक खर्चा आनेपर ४ किताबों भेट मेंभी आवेगी

पुस्तकोंकी आवादानीसे अन्य पुस्तकों छपाई जाती हैं।

पत्ता—

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञान पुष्पमाला
मु० फलोधी—मारवाड़

श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानपुष्पमाला पुष्प नं०

श्री रत्नप्रभसूरीश्वर सद्गुरुभ्यो नमः ।

अथ श्री

द्रव्याणुयोग

प्रथम प्रवेशिका ।

संग्राहक—

श्रीमदुपकेशगच्छीय मुनिश्री
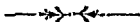
ज्ञानसुन्दरजी (गयवरचन्दजी)

प्रकाशक—

शाह धनसुखदासजी आशकरणजी गोलेच्छा

मु० फलोदि (मारवाड)

'जैनविजय' प्रिंटिंग प्रेस, खपाटिया चकला-सूरतमें

मूलचन्द किसनदास कापडियाने मुद्रित किया।

प्रथमावृत्ति ५०००] [वीर सं० २४४७

ॐ

धर्मके सन्मुख होनेवालोंमें १५ गुण।

१ लिलीवान हो, कारण लिनी धर्मकी माता है।
२ हिम्मत बाहादुर हो, कायरोंमें धर्म नहीं होता है
३ धीर्यवान् हो, हरेक कार्यमें आतुरता न करे।
४ बुद्धिवान हो, हरेक कार्य स्वमति विचारके करे।
५ असत्यको धीकारनेवाला हो।
६ निष्कपटी हो, हृदय साफ स्फटक माफिक हो।
७ विनयवान, और मधुर भाषाका बोलनेवाला हो
८ गुणग्रहाइहो, और स्वात्म श्लाघा न करे।
९ सत्यवान प्रतज्ञा पालक हो।
१० दयावान हो, और परोपकार कि बुद्धि हो।
११ सत्य धर्मका अर्थी हो।
१२ जितेंन्द्रियहो।
१३ आत्म कल्याण कि द्रढ इच्छा हो।
१४ तत्त्व विचारमें निपुण हो।
१५ जिन्होंके पास धर्म पाया हो उन्होंका उपकार
कभी भुले नहीं समयपाके प्रति उपकार करे

इति।

ज्ञानाभ्यासीयोंको इन्ही बोलोंको आवश्य अमलमें लेना चाहिये।

१ ज्ञान पढनेकि तीव्र इच्छा करनेसे ज्ञान कि वृद्धि होती है।
२ ज्ञानका प्रबल उद्यम करनासे ज्ञान०
३ ज्ञान पढनेवालेको साहित्य देनासे ज्ञान०
४ ज्ञान मय किताबों पढनेसे ज्ञान०
५ ज्ञानवंत पुरुषोंकि सेवा भक्ति करनेसे ज्ञान०
६ ज्ञान कि चर्चा वार्ता करनेसे ज्ञान०
७ गुरवादि वडावोंके केहना माफिक चलनासे०
८ निद्रा स्वल्प लेनासे ज्ञान०
९ स्वल्प भोजन करनेसे ज्ञान०
१० ब्रह्मचार्यव्रत पालन करनेसे ज्ञान०
११ पांचेन्द्रिय दमन करनेसे ज्ञान०
१२ जगत कि तृष्णा कम करनेसे ज्ञान०
१३ पढे हुवे ज्ञानमें प्रवृति करनासे ज्ञान०

"ज्ञानस्य सारवृत्ति"

इति।

४ कारणसे केवलज्ञान दुर रेहता है।

१ च्यार प्रकार कि विकथा वारवार करनेसे
२ प्रतिदिन कायोत्सर्ग ध्यान मौंन न करनेसे
३ पिछली रातका उठके धर्म जागरणा न करनेसे
४ आहार पाणीकि शुद्ध गवेषणा न करनेसे
यह च्यार कारणको विप्रित (अच्छा) करनेसे
ज्ञान दुर होतो नजीक होता है अर्थात्
केवल ज्ञान जरदी होता है।

च्यार कारणसे छतागुण दीपे।

१ गुणी जनोका गुण कीर्तन करनेसे
२ गुरु आदि वडावोके केहनेमे चलनासे
३ प्रतिदिन ज्ञानाभ्यास करनेसे।
४ विषय कषायको उपशमानासे।

इन्ही च्यारोका विप्रीत करनेसे छतागुणोका नास होता है च्यार प्रकार कि सुख सेज्या।

१ निग्रथके वचनोंमे शंका कक्षा न करे
२ अपना हीं लाभमें संतोष रखे।
३ काम भोगोकि अभिलषा न करे।
४ शरीर कि विभूषा (शोभा) न करे।
इन्ही च्यारो कारणको विप्रीत करनेसे दुःख सेज्या

थोकडा न० १

पच्चिस बोल.

(१) पहले बोल गति चार—नरकगति, तिर्यचगति, मनुष्यगति, देवगति

(२) जाति पांच—एकेंद्रियजाति, बे इंद्रियजाति, तेइंद्रियजाति, चौरिंद्रियजाति, पचेंद्रियजाति

(३) काय ६—पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायूकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय

(४) इन्द्रिय पाच—श्रोतेंद्रिय, चक्षुइंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, रसेंद्रिय, स्पर्शेंद्रिय

(५) पर्याप्ति ६—आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति, इंद्रियपर्याप्ति, श्वासोश्वासपर्याप्ति, भाषापर्याप्ति, मन पर्याप्ति

(६) प्राण दश—श्रोतेंद्रिय बलप्राण, चक्षुइंद्रिय बल प्राण, घ्राणेंद्रिय बल०, रसेंद्रिय बल०, स्पर्शेंद्रिय बल० मनबल० वचनबल०, कायबल०, श्वासोश्वास बल०, आयु बल०

(७) शरीर पाच—औदारिक शरीर, वैक्रिय० आहारक० तेजस० कार्मण०

(८) योग पन्दरह—४ मनरा, ४ वचनरा, ७

कायरा, सत्य मनयोग, असत्य मनयोग, मिश्रमनयोग, व्यवहार मनयोग ४, सत्य भाषा, असत्य भाषा, मिश्र भाषा, व्यवहार भाषा ४, औदारिक काय योग, औदारिक मिश्रकाययोग, वैक्रिय काययोग, वैक्रियमिश्रकाययोग, आहारककाययोग, आहारकमिश्र काययोग, कार्मण काययोग ७

(९) उपयोग बारे—पांच ज्ञान तीन अज्ञान चार दर्शन। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवल ज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभंगज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधिदर्शन, केवलदर्शन।

(१०) कर्म आठ—ज्ञानावरणीय (जैसे पत्तीका बेल), दर्शनावरणीय (जैसे राजाका पोलीया), वेदनीय (जैसे सहत भरी छुरी), मोहनीय (जैसे मदीरा पीया पुरष), आयु कर्म (जैसे खोडो) नामकर्म (जैसे चीतारा), गोत्रकर्म (जैसे कुमार), अंतरायकर्म (जैसे राजाका भंडारी)

(११) गुणस्थानक चौदह—मिथ्यात्व गुणस्थान १ सास्वादन २ मिश्र ३ अविरती सम्यक्दृष्टि ४ देशविरती श्रावक ५ प्रमत साधु ६ अप्रमत्त साधु ७ निवृत्तिबादर ८ अनिवृत्तिबादर ९ सूक्ष्मसंपराय १० उपशांतमोह ११ क्षीणमोह १२ सयोगीकेवली १३ अयोगीकेवली १४

(१२) पांचोंद्रियोंका २३ विषय–श्रोतेंद्रियका **तीन विषय** जीव शब्द, अजीव शब्द, मिश्र शब्द **चक्षु इंद्रियका पाच विषय** काळो, लीलो, रातो, पीळो, सफेद, **घ्राणेंद्रियका दो विषय** सुगंध दुर्गंध, **रसेंद्रियका पाच** विषय तीखो कडवो, कषायलो, खाटो मीठो, **स्पर्शेंद्रियका आठ विषय** खरखरो, सुवालो, भारी, हलको, शीत, उष्ण, स्निग्ध, लुखो

(१३) दश प्रकारके मिथ्यात्व है।

१ जीवकों अजीव श्रद्दहे तो मिथ्यात्व
२ अजीवकों जीव श्रद्दहे तो मिथ्यात्व
३ धर्मकों अधर्म श्रद्दहे तो मिथ्यात्व
४ अधर्मकों धर्म श्रद्दहे तो मिथ्यात्व
५ साधुकों असाधु श्रद्दहे तो मिथ्यात्व
६ असाधुकों साधु श्रद्दहे तो मिथ्यात्व
७ संसारका मार्गकों मोक्षका मार्ग श्रद्दहे तो मिथ्यात्व
८ मोक्षका मार्गकों संसारका मार्ग श्रद्दहे तो मिथ्यात्व
९ अष्टकर्मसे मुक्तको अमुक्त श्रद्दहे तो मिथ्यात्व
१० अष्टकर्मसे अमुक्तकों मुक्त श्रद्दहे तो मिथ्यात्व

(१४) चौदवें बोल छोटी नवतत्त्वके ११५ बोल·

नव तत्त्वके नाम–जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व, पुण्य तत्त्व, पापतत्त्व, आश्रव तत्त्व, सम्वर तत्त्व, निर्जरा तत्त्व, बन्ध तत्त्व, मोक्ष तत्त्व, यह नव तत्त्व है।

अब नव तत्त्वके अन्दर–जीव तत्त्व, अजीव तत्त्व जानने योग्य है। पाप तत्त्व, आश्रव तत्त्व, बन्ध तत्त्व समझके परित्याग करने योग्य है। सम्वर तत्त्व, निर्जरा तत्त्व, मोक्ष तत्त्व यह स्वीकार करने योग्य है। पुण्य तत्त्व नैगम नयसे, ग्रहण करने योग्य है और व्यवहार नयसे जानने योग्य और निश्चय नयसे परित्याग करने योग्य है।

नव तत्त्वमें–च्यार तत्त्व जीव है–जीव, सम्वर निर्जरा, और मोक्ष। और पाच तत्त्व अजीव हैं–अजीव, पुन्य, पाप, आश्रव, बन्ध।

नव तत्त्वमें रूपी तत्त्व च्यार–पुन्य, पाप, आश्रव, बन्ध, और अरूपी तत्त्व च्यार–जीव, सम्वर, निर्जरा, मोक्ष, और रूपी अरूपी एक अजीव तत्त्व हैं।

नव तत्त्वमें–निश्चय नयसे जीवतत्त्व है सो जीव है और अजीव है सो अजीव तत्त्व है और सात तत्त्व है। वह जीव तथा अजीवकी पर्याय हैं।

प्रश्न —जीवतत्त्व किसको कहते हैं ?

उत्तर —जीव चैतन्य लक्षण व पुन्य पापका करता, सुख और दुःखका भोक्ता, पर्याय प्राण गुणस्थान करके सयुक्त, द्रव्य करके जीव शास्वतो, भूतकालमें जीवथा, वर्तमान कालमें जीव हैं, भविष्य कालमें जीव रहेगा, त्रिकालके अन्दर जीवका अजीव होने वाला नहीं उसको जीवतत्त्व कहते हैं

अथ जीवतत्त्वके चौदह भेद है

सुक्ष्म एकेन्द्रिय	१—	बादर एकेन्द्रिय	२
बेइन्द्रिय	३—	तेइन्द्रिय	४
चौरिन्द्रिय	५—	असन्नि पचेन्द्रिय	६
सन्नि पचेन्द्रिय	७ —	यह सात भेदोंको—पर्याप्ता	

अपर्याप्ता दोदो भेद करते हुए चोन्दह हुवे।

प्रश्न —अजीव तत्वका क्या लक्षण हैं ?

उत्तरः—अजीव जड है, पुन्य पापका अकर्ता, सुख दुःखका अभोक्ता, पर्याय प्राण गुणस्थान, करके रहित है और द्रव्य अजीव शास्वतो, भूतकालमें अजीव था, वर्तमानकालमें अजीव है, भविष्यकालमें अजीव रहेगा, त्रिकालमें भी अजीवका जीव होगा नहीं ।

अब अजीवतत्वके चौदह भेद हैं।

धर्मास्तिकायका तीन भेद –स्कध, देश, प्रदेश ।

अधर्मास्किायका तीन भेद –स्कध, देश, प्रदेश ।

आकाशास्तिकायका तीन भेद – स्कंध, देश, प्रदेश

दशवा कालका भेद जानना।

पुद्गलास्तिकायका चार भेद –स्कध, देश, प्रदेश, परमाणु ।

प्रश्न –पुन्यतत्वका क्या लक्षण है ।

उत्तर —पुन्यका शुभ फल बाधतिवक्त दु खपूर्वक और भोगवती वक्त सुखपूर्वक क्योंकि दु खसे बाधे और सुखसे भोगवते है –यथा–सुवर्णकी बेडीके मुताबिक है। पुन्य जीवको ऊर्ध्व गतिमें पहुचाता है, उसको पुन्यतत्व कहे है–जिसका भेद नौ है

अन्नपुन्ये—अशनादिके देनेसे फल होता है।

पाणपुन्ये—जलके देनेसे फल होता है

लेनपुन्ये—मकानादिके दनेसे फल होता है।

सेनपुन्ये—शय्या–पाट–पाटलादिके देनेसे।

वत्थपुन्ये—वस्त्रादिके देनसे फल होता है ।

मनपुन्ये—दूसरेके लिये अच्छा दिल, रखनेसे ।

वचनपुन्ये—दूसरेको मधुर वाक्य बोलनेसे फल ।

कायपुन्ये—दूसरोंकी दिलोजानसे बदगीबजानेसे ।

नमस्कार पुन्ये—महात्माओंको शुद्ध भावमे नमस्कार करना उसको पुण्य तत्त्व कहा जाता है।

प्रश्न—पाप तत्त्व किसे कहते हैं। क्या लक्षण हैं।

उत्तर पापका अशुम फल याने पु यसे विपरित समझना।

१ प्राणातिपात—जीवोंकी हिंसा करना।

२ मृषावाद—असत्य वचनका बोलना।

३ अदत्तादान—चौरी कर्मका करना।

४ मैथुन—कुशीलका सेवन करना।

५ परिग्रह—मूर्च्छाको बढाना।

६ क्रोध—गुस्साका करना।

७ मान—अहंकारका करना।

८ माया—आलसादिका करना।

९ लोम—तृष्णाको बढ़ाना।

१० द्वेष—ईर्षाका करना।

११ कलह—लड़ाई झगड़ाका करना।

१२ राग—मोवतका करना।

१३ अभ्याख्यान—झुठा कलंकका देना।

१४ पैशुन्य—चुगलका करना।

१५ रति अरती—राग द्वेषका करना।

१७ वचनाश्रव वचनको काबुमें न रखनेसे
१८ कायाश्रव अपनी कायाको खुल्ली रखनेसे
१९ भडोपरणाश्रव अयनासे लेना और रखनेसे
२० सूईकुशमात्राश्रव अयत्नासे लेना और रखना

प्रश्नः—सम्वर तत्व किसे कहते हैं क्या लक्षण है।

उत्तरः—जीवरूपी तालाव और कर्मरूपी नालजिससे पुन्य पाप रूपी जल आरहा है उसको रोकना वही सम्वर है— जिसका भेद बीश है।

१ समकित सम्वर। २ व्रतप्रत्याख्यान सम्वर
३ अप्रमाद सम्वर। ४ अकषाय सम्वर।
५ शुभयोग सम्वर। ६ प्राणातिपात न करना, सम्वर।
७ मृषावाद न बोलना सवर। ८ अदत्तादान न करना, सम्वर।
९ मैथुन न सेवे,ना सम्वर। १० परिग्रह सम्वर।
११ श्रोत्रेन्द्रिय सवर। १२ चक्षुन्द्रिय सवर।
१३ घ्रणेंद्रिय सवर। १४ रसेन्द्रिय सम्वर।
१५ स्पर्शेन्द्रिय सम्वर। १६ मन सम्वर
१७ वचन सम्वर। १८ काय सम्वर।
१९ भडोपक्करण सम्वर। २० सुई कुसमात्र सम्वर।

प्रश्न—निर्जराका क्या लक्षण है किसे कहते हैं।

उत्तर—जीवरूपी कपड़ा, कर्मरूपी मेल, ज्ञानरूपी जल, तपश्चर्या रूपी साबनसे धोके सफेद झक करना उसको निर्झरा कहते हैं जिसका भेद बारह।

१ अनशन तप—उपवासादिके करनेसे तप।

२ ऊंनोदरि तप—कुछ कम खानेसे तप होता हैं।

३ भिक्षाचर्य तप—अभिग्रह नियमादिकका करना।

४ रसत्याग तप—रसका त्याग करनेसे तप हो।

५ कायक्लेश तप—आसनादिके करनेसे तप।

६ सलिहनता तप—विषय कषायसे निवृति होना।

७ प्रायश्चित तप—आलोचनाके करनेसे तप।

८ विनय तप—बडादिका विनयके करनेसे।

९ वैयावृत्य तप—आचार्यादिकी बन्दगी बजानेसे।

१० स्वाध्याय तप—स्वाध्याय करनेसे।

११ ध्यान तप—ध्यानादिके करनेसे।

१२ कायोत्सर्ग तप। कायोत्सर्गके करनेसे।

प्रश्न—बंधतत्त्वका क्या लक्षण हैं।

उत्तर—विषय कषायकी प्रवृत्तिसे कर्मदल इकट्ठा करके जीवके प्रदेशोंके साथ बंध होता हैं उसे बंधतत्व कहते हैं। जिसके भेद च्यार हैं—

१ प्रकृतिबंध । १४८ प्रकृतिका बधका होना ।

२ स्थितिबन्ध । कर्मोकि स्थितिका बन्ध ।.

३ अनुभागबन्ध कर्मोके अन्दर रसका पड़ना ।

४ प्रदेशबन्ध । प्रदेशोंका बध होना ।

प्रश्न —मोक्षतत्वका क्या लक्षण हैं ।

उत्तर —अष्ट कर्मोसे मुक्त करे उसे मोक्षतत्व कहते हैं जिसका भेद चार क्रमसे पढे ।-

प्रथम ज्ञान, द्वितीय दर्शन, तृतीय चारित्र, चतुर्थ तपश्चर्य इति ।

(१५) आत्मा आठ-द्रव्यात्मा, कषायात्मा, योगात्मा, उपयोगात्मा, ज्ञानात्मा, दर्शनात्मा, चारित्रात्मा, वीर्यात्मा ।

(१६) दडक २४-सात नारकीका एक दडक (सात नारकीका नाम) घमा १ वशा २ शिला ३ अमणा ४ रिठा ५ मघा ६ माघवती७ (सात नारकीकागोत्र) रत्नप्रमा १ शर्कराप्रमा २ वालुकाप्रमा ३ पङ्कप्रमा ४ धूमप्रमा ५ तमप्रमा ६ तमतमाप्रमा ७

दश भुवनपतिका दश दडक दश भुवनपतिके नाम असुरकुमार १ नागकुमार २ सुवर्णकुमार ३ विद्युत्कुमार ४ अग्निकुमार ५ द्वीपकुमार ६ दिशिकुमार ७ उदधिकुमार ८ वायुकुमार ९ स्तनितकुमार १०

बारमो पृथ्वीकायको दंडक, तेरमो अपकायको दंडक, चौद मो तेउकायको दंडक, पनरमो वायुकायको दंडक, सोलमो वनस्प तिकायको दंडक, सत्तरमो बेंद्रियको दंडक, अढारमो तेइन्द्रियको दंडक, उगणीसमो चौरिंद्रियको दंडक, बीसमो तिर्यंचपचेंद्रियको दंडक, एकवीसमो मनुष्यको दंडक, बावीसमो वाणव्यंतर देवताको दंडक, तेवीसमो ज्योतिषी देवताको दंडक, चोवीसमो वैमानिक दंडक,

(१७) लेश्या ६—कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, और शुक्ललेश्या,

(१८) दृष्टि तीन—सम्यगदृष्टि, मिथ्यादृष्टि, मिश्रदृष्टि।

(१९) ध्यान चार ४—आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, शुक्लध्यान।

(२०) षद्द्रव्यके जाणपणाका तीस बोल—

षटद्रव्यका नाम धमास्तिकाय, अधमास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, कालधमास्तिकाय, पाच-बोलसे ओलखीजे, द्रव्य थकी एक द्रव्य, क्षेत्र थकी लोकप्रमाणे, कालथकी आदिअंत रहित, भावथकी अरूपी, वर्ण नहीं गन्ध नहीं रस नहीं स्पर्श नहीं, गुणथकी चलणगुण, पाणीमें 'मच्छीका दृष्टान्त'

अधर्मास्तिकाय पांचबोलें ओलखीजे, द्रव्य थकी एक द्रव्य, क्षेत्रथकी लोक प्रमाणे, कालथकी आदिअंतरहित, भावथकी अरूपि;

वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, गुणथकी स्थीरगुण, थाक्या हुआ पन्थीने 'रूखकी छायाको दृष्टान्'

आकाशास्तिकाय पाच बोलो ओलखीजे द्रव्यथकी एकद्रव्य, क्षेत्रथकी लोकालोक प्रमाणे, कालथकी आदिअंतरहित, भावथकी अरूपि, वर्ण नहीं, गंध नहीं, रसनहीं स्पर्श नहीं, गुणथकी आकाशमें वीकासगुण, 'भीतमें खुटीका तथा पाणीमे पतासाको दृष्टात्'

जीवास्तिकातकाय पाच बोले ओलखीजे द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य, क्षेत्रथकी लोकप्रमाणे, कालथकी आदिअंत रहित, भावथकी अरूपि, वर्ण नहीं, गन्ध नहीं, रस नहीं, गुणथकी उपयोगगुण 'चद्रमाकी कलाको दृष्टात'

पुद्गलास्तिकाय पाच बोलसे ओलखीजे द्रव्यथकी अनन्ता द्रव्य, क्षेत्रथकी लोक प्रमाणे, कालथकी आदि अंतरहित भावथकी रूपि, वर्ण है, गन्ध है, रस है, स्पर्श है, गुणथकी गले मिले, 'बादलका दृष्टान्'

काल पाचबोलसे ओलखीजे; द्रव्यथकी अनताद्रव्य, क्षेत्रथकी अढाईद्वीप प्रमाणे, कालथकी आदि अंत रहित, भावथकी अरूपि, वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं, गुणथकी नवी वस्तुको जूनी करे और जूनीको खपावे, 'कपड़ा कत्तरणीको दृष्टांत'

सूर्य-सूर्यके एक लक्ष योजनका अन्तर हैं और सूर्य चन्द्रके पचास हजार योजनका अन्तर है। अन्दरके जोतीषीयोंसे आदि प्रभा (क्रान्ति) है और जैसे वहार है वैसे ही पाच प्रकारके जोतिषी अढाई द्वीपके अन्दर हैं एव दश भेद है (४) वैमानिक देवताओंके दो भेद है (१) कल्प (२) कल्पातीत।

कल्प-जो बडे छोटेका कायदा जिन्होंका १२ नाम।

(१) सुधर्म देवलोक	(५) ब्रह्म	(९) आणत
(२) इशान ,,	(६) लान्तक	(१०) प्राणत
(३) सनतकुमार	(७) महाशुक्र	(११) आरण्य
(४) महेन्द्र	(८) सहस्र	(१२) अच्युत देवलोक

तीन किल्विषीया देवता (१) तीन पल्योपमकी स्थितिवाले पहले-दूसरे-देवलोकके बाहिर (२) तीन सागरोपमवाले तीजे चौथे देवलोकके बाहिर (३) तेरे सागरोपमवाले छट्टा देवलोकके बाहिर। यँह देव यहासे आचार्योपाध्यायके अवर्णवाद बोलनेवाले मरके किल्विषि देव होते है वहा पर स्वच्छ देव उन्हीं देवताओंका बडा भारी तिरस्कार करते है और स्व विमानसे बाहिर कर देते हैं।

नवलोकान्तिक देवता पाचमें देवलोकमें रहते है।

(१) सारस्वत (४) वरुण (७) अगाबाह

(२) आदित्य (५) गदत्तोय (८) अगीचा
(३) विष्णु (६) तुषित्त (९) रिट्ठा

कल्पातितके दो भेद (१) ग्रैवेक (२) अनुत्तरविमान

नव ग्रैवेकके नव भेद है—

(१) भद्दे (४) सुमाणसे (७) अमोहे
(२) सुभद्दे (५) सुदंशणे (८) सुपड़ीवद्दे
(३) सुजाए (६) प्रीयदशणे (९) जशोद्धरे

अनुत्तर विमानके देवतावोंका (५) भेद हैं

(१) विजय (३) जयत (५) सर्वार्थसिद्द
(२) विजयत (४) अपराजित

एव देवताओंके (९९) भेद है जिस्के पर्याप्ता, अपर्याप्ता, मिलानेसे (१९८) मेद होते हैं ॥ इस प्रकार जीव रासीका वर्णन सूक्ष्म मात्र किया है विस्तार देखो–शीघ्र बोध भाग दूसरा इति।

(२) अजीव रासीके (५३०) भेद हैं जिसमें मूल भेद दोय है (१) रूपि (२) अरूपि, जिसमें अरूपिके चार भेद हैं

(१) धर्मास्तिकाय (३) आकाशास्तिकाय
(२) अधर्मास्तिकाय (४) अद्धासमय (काल)

धर्मास्ति अधर्मास्तिके असख्याता प्रदेश है और आकाशास्तिके अनन्ता प्रदेश है, तथा अद्द समय अर्थात् कालका अनन्त

समय है इसके (१०) भेद है यो देखो बोल न० १४-२० वा (२) रूपि अजीवके चार भेद हैं (१) स्कध (२) स्कध देश (३) स्कंध प्रदेश (४) परमाणु पुद्गल और इसीको पुद्गलास्तिकाय भी कहते हैं वह पुद्गल पाच प्रकारसे परिणमते है जैसे (१) वर्णपणे (२) गधपणे (३) रसपणे (४) स्पर्शपणे (५) सस्थानपणे जिसके (५३०) भेद होते हैं यहा पर सक्षेप मात्रसे वर्णन किये हैं।

सविस्तर देखो शीघ्रबोध भाग दुसरा अजीवतत्त्व इति।

(२२) श्रावकका १२ व्रत–त्रसजीव मारनेका त्याग करे और स्थावरकी मर्यादा करे १, मोटका जुठ नहीं बोले २, मोटकी चोरी नहीं करे ३, परस्त्रीका त्याग करे और घरकी स्त्रीकी मर्यादा करे ४, परिग्रहका प्रमाण करे ५, दीशाका प्रमाण करे ६, उपभोग परिभोगका प्रमाण करे (पनरे कर्मादानका त्याग करे) ७, अनर्था दडका त्याग करे ८, सामायक करे ९, देशावागासी चौदा नियम धारे १०, पोषधोपवास करे ११, साधु महाराजको दान देवे १२

(१३) साधुजी महाराजका पाच महाव्रत–

१ सर्वथा प्रकारसे जीवहिंसा करे नहीं करावे नहीं कर्त्ताने अनुमोदे नहीं मनसू वचनसू कायसू २ सर्वथा प्रकारे जुठ बोले नहीं तीन करण तीन जोगसू ३ सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं

तीन करण तीन जोगसु ४ सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवे नहीं, तीन करण तीन जोगसु, ५ सर्वथा प्रकारे परिग्रह त्याग करे, तीनकरण तीन जोगसु ६ रात्रिभोजन करे नहीं, तीन करण तीन जोगसु।

(१४) श्रावकोंके भांगा ४९

आक एक ११ भागा ९		आक एक १२ भागा ९
एककरण एक जोगसे		एककरण दोय जोगसे
१ करू नहीं	मणसा	१ करू नहीं मणसा वायसा
२ करू नहीं	वायसा	२ करू नहीं मणसा कायसा
३ करू नहीं	कायसा	३ करू नहीं वायसा कायसा
४ कराउ नहीं	मणसा	४ कराउ नहीं मणसा वायसा
५ कराउ नहीं	वायसा	५ कराउ नहीं मणसा कायसा
६ कराउ नहीं	कायसा	६ कराउ नही वायसा कायसा
७ अनुमोदू नहीं	मणसा	७ अनुमोदू नहीं मणसा वायसा
८ अनुमोदू नहीं	वायसा	८ अनुमोदू नहीं मणसा कायसा
९ अनुमोदू नहीं	कायसा	९ अनुमोदू नहीं वायसा कायसा

आक एक १३ भागा ३ एककरण तीन जोगसे

१ करू नहीं, मणसा वायसा कायसा
२ कराउ नहीं, मणसा वायसा कायसा
३ अनुमोदू नहीं, मणसा वायसा कायसा,

आंक एक २१ भागा ९ दोयकरण एक जोगसे

१ करू नहीं कराउ नहीं, मणसा
२ करू नहीं कराउ नहीं, वायसा
३ करू नहीं कराउ नहीं, कायसा
४ करू नहीं अनुमोदू नहीं, मणसा
५ करू नहीं अनुमोदू नहीं, वायसा
६ करू नहीं अनुमोदू नहीं, कायसा
७ कराउ नहीं अनुमोदू नहीं, मणसा
८ कराउ नहीं अनुमोदू नहीं, वायसा
९ कराउ नहीं अनुमोदू नहीं, कायसा

आंक एक २२ भागा ९ दोयकरण दोय जोगसे

१ करू नहीं कराउ नहीं, मणसा वायसा
२ करू नहीं कराउ नहीं, मणसा कायसा
३ करू नहीं कराउ नहीं वायसा कायसा
४ करू नहीं, अनुमोदू नहीं, मणसा वायसा
५ करू नहीं, अनुमोदू नहीं, मणसा कायसा
६ करू नहीं अनुमोदू नहीं, वायसा कायसा
७ कराउ नहीं, अनुमोदू नहीं, मणसा वायसा

८ कराउ नहीं, अनुमोदू नहीं, मणसा कायसा
९ कराउ नहीं, अनुमोदू नहीं, वायसा कायसा
आक एक २१ भांगा ३ दोयकरण तीन जोगमे
करू नहीं, कराउ नहीं, मणसा वायसा कायसा
करू नहीं अनुमोदु नही, मणसा वायसा कायसा
कराउ नहीं, अनुमोदु नहीं, मणसा वायसा कायसा
आक एक ३१ भागा ३ तीकरण एक जोगसे
१ करू नहीं कराउ नहीं अनुमोदू नहीं, मणसा
२ करू नहीं, कराउ नहीं, अनुमोदू नहीं, वायसा
३ करू नहीं, कराउ नहीं, अनुमोदू नहीं, कायसा
आक एक ३२ भागा ३ तीन करण दो जोगसे
१ करू नहीं, कराउ नहीं, अनुमोदू नहीं मणसा वायसा
२ करू नहीं कराउ नहीं, अनुमोदू नहीं मणसा कायसा
३ करू नहीं, कराउ नहीं, अनुमोदू नहीं वायसा कायसा
आक एक ३३ भागों १ तीन करण तीनजोगसे
करू नहीं कराउ नहीं अनुमोदू नहीं, मणसा वायसा कायसा

(२५) चारित्र ५—(१) सामायिक चारित्र (२) छेदोपस्थापनीय चारित्र (३) परिहारविशुद्धि चारित्र (४) सुक्ष्मसंपराय चारित्र (५) यथाख्यात चारित्र

(२६) सात नय—नैगमनय, सम्रहनय, व्यवहारनय, रजुसूत्रनय, शब्दनय, समभिरूढनय, एवभूतनय

(२७) चारनिक्षेप—नामनिक्षेप, स्थापनानिक्षेप, द्रव्यनिक्षेप, भावनिक्षेप

(२८) पाच समकित—उपशमसमकित क्षायोपशम समक्ति क्षायिक समक्ति, शास्वादानसमकित, वेदकसमकित

(२९) नवरस—शृगाररस, वीररस, करुणारस, हास्यरस, रौद्ररस, भयानकरस, अद्भूतरस, विभत्सरस, शातरस

(३०) बावीस अभक्ष्य—१ वडका पीपु २ पीपलका पीपु ३ पीपरीका पीपु ४ उबरका फल ५ कठुबरका फल ६ मधु ७ माखण ८ मास ९ मदिरा १० हेम ११ विष–अफिण सोमल-प्रमुख १२ करहाते (गडा) १३ सर्व जातकी कच्ची माटी १४ रात्रिभोजन १५ बहुबीज फल १६ अनतकाय–कदमुल फल १७ बोरको अथाणु १८ काचा गोरसमें करेला वडा १९ वेगणरींगणा २० जिसका नाम न जाणता हो ऐसा अनाण्या फलफूल २१ तुच्छ फल ते बोरादि बिगडी हुई वस्तु, अत्यत काचा फल पील प्रमुख २२ चलितरस ते सडहवा, अन्नादिक जिसका काल पूरा होनेसे स्वाद बिगड गया हो रस चलित हो गया होय वे

(३१) चार अनुयोग—१ द्रव्यानुयोग २ गणितानुयोग ३ चरण करणानुयोग ४ धर्म कथानुयोग

(३२) तीन तत्व—१ देवतत्व, २ गुरुतत्व, ३ धर्मतत्व

(३३) पांच समवाय—१ काल, २ सभाव, ३ नियत, ४ पूर्वकृत (कर्म) ५ पुरषाकार (उद्यम)

(३४) पांखडिका ३६३ भेद—एक क्रियावादीका एकसो एशी भेद, दुजा अक्रियावादीका चौराशी भेद, तीजा विनयवादीका बतीश भेद, चोथा अज्ञानवादीका सटसठ भेद एव तीनसें तेसठ भेद श्री सुयगडायग सूत्रथी जाणवा

(३५) श्रावकका २१ गुण

१ क्षुद्र मतिवाला नहीं हुवे किंतु गंभीर चितवाला होय
२ रूपवत सर्व अग सम्पूर्ण होय
३ सौम्य प्रकृतिवाला होय
४ लोकोंको वल्लभ लागे, प्रशसा करवाजोग हुवे
५ क्रुर नहीं असक्लेसित चित होय
६ इहलोक परलोकके अपयशसें डरे
७ अशठ (परकुं ठगे नहीं)

८ परकी प्रार्थनाका भंग न करे, दाक्षिण्य गुणवत होवे
९ लोकोत्तर लौकिक लज्जावत होवे
१० दयालु सर्वेपर दया रक्खे
११ सौम्यदृष्टी यथा वस्तु विचारकी दृष्टी तथा रागद्वेष
रहित मध्यस्थ दृष्टीवाला होय
१२ गुणोंका रागी होय
१३ सत्यकथा धर्मकथाका केणहार होय
१४ सुशील अनुकूल परिवार युक्त होय
१५ दिर्घदर्शी, उंडा विचार करके भला कार्य करे
१६ पक्षपात रहित गुणदोष विशेषको जाणे
१७ वृद्ध पुरुष भला मतीवंतका सेवनवाला होय
१८ विनयवंत गुणी पुरुषका विनयादि करे
१९ किये उपगारका बदला उतारे (कृतज्ञ)
२० निर्लोभीपणे परउपगार करे
२१ लब्धिलक्ष धर्मअनुष्टान व्यवहारका लक्ष जिसको प्राप्त हो

सेव भंते सेव भंते तमेर सचम्।

—❧—

थोकड़ा न० २

सूत्र श्री जीवाभिगम प्र० १

लघुदंडक बालबोध ।

२४ दंडकके नाम ।

१ सातों नरकका एक दडक		१३ अपकाय	,,
२ असुरकुमार देवता	,,	१४ तेऊकाय	,,
३ नागकुमार ,,	,,	१५ वायुकाय	,,
४ सुवर्णकुमार ,,	,,	१६ वनस्पतिकाय	,,
५ विद्युत्कुमार ,,	,,	१७ बेन्द्रिय	,,
६ अग्निकुमार ,,	,,	१८ तेन्द्रिय	,,
७ द्वीपकुमार ,,	,,	१९ चोन्द्रिय	,,
८ दिशिकुमार ,,	,,	२० तिर्यचपचेंद्रिय	,,
९ उदधिकुमार ,,	,,	२१ मनुष्य	,,
१० वायुकुमार ,,	,,	२२ व्यंतर देवता	,,
११ स्तनितकुमार ,,	,,	२३ ज्योतिषी ,,	,,
१२ पृथ्वीकाय ,,	,,	२४ वैमानिक ,,	,,

२० तीर्यंचके दंडकमें सन्नी-असन्नी दो भेद है ।

२१ मनुष्यके दंडकमें सन्नी-असन्नी दो भेद है और सन्नीके कर्म भूमि अकर्म भूमि और अन्तरद्विप यह तीन भेद है ।

२४ वैमानिकके दंडकमें बारा देवलोक, नवलोकान्तिक, तीनकिल्वीषी, नवग्रीवेग और पांच अणुत्तर वैमान एवं ३८ भेद है ।

२४ द्वारोंका नाम

१ शरीर ५	९ समुद्घात ७	१७ योग १५
२ अवगाहना २	१० सज्ञी २	१८ उपयोग २
३ सघयण ६	११ वेद ३	१९ आहार २
४ सस्थान ६	१२ पर्याप्ति ६	२० उत्पात १
५ सज्ञा ४	१३ दृष्टि ३	२१ स्थिति २
६ कषाय ४	१४ दर्शन ४	२२ मरण २
७ लेश्या ६	१५ ज्ञान ५	२३ चवण १
८ इन्द्रिय ५	१६ अज्ञान ३	२४ गति २

ऊपर लिखे २४ द्वारोंका विवरण।

(१) शरीर पाच—औदारिक शरीर, वैक्रिय शरीर, आहारिक शरीर, तैजस शरीर, कार्मण शरीर,

(२) अवगाहना दो—भवधारिणी-(भवसम्बन्धी) उत्तरवैक्रिय भवधारिणीमें न्यूनाधिक करना,

(१) **संघयणके छै भेद**—वज्रऋषभनाराच संघयण, ऋषभनाराच स०, नाराच स०, अर्ध नाराच संघयण, कीलिका स०, छेवटु स०,

(४) **संस्थानके छै भेद**—समचौरस संस्थान, नगोह परिमंडल स०, सादि स० वामन (बावनो) स०, कुब्ज (कूबडो) स०, हुंडक स०,

(५) **संज्ञाके च्यार भेद**—आहारसंज्ञा, भय स०, मैथुन स०, परिग्रह स०,

(६) **कषायके चार भेद**—क्रोध, मान, माया, लोभ,

(७) **लेश्याके छै भेद**—कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत ले०, तेजो ले०, पद्म ले०, शुक्ल ले०,

(८) **इन्द्रियके पांच भेद**—श्रोतेंद्रिय, नेत्रेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, रसेंद्रिय, स्पर्शेन्द्रिय,

(९) **समुद्घातके सात भेद**—वेदनी-समुद्घात, कषाय स०, मरणान्त स०, वैक्रिय स०, तेजस स० आहारिक स०, केवली समुद्घात

(१०) **सज्ञीके दो भेद**—जिनके मन हो वह सन्नी, जिसके मन न हो वह असन्नी

(११) **वेदके तीन भेद**—पुरुषवेद (स्त्रीकी अभिलाषा करे), स्त्र वेद (पुरुषकी अभिलाषा करे), नपुंसक वेद (स्त्री पुरुष दोनोंकी अभिलाषा करे)

(१२) **पर्याप्तिके छै भेद**—आहार पर्याप्ति, शरीर प० इन्द्रिय प०, श्वासोश्वास प०, भाषा प०, मन प०,

(१३) **दृष्टिके तीन भेद**—सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, मिश्रदृष्टि०

(१४) **दर्शनके चार भेद**—चक्षुदर्शन, अचक्षु द०, अवधि द०, केवल द०,

(१५) **ज्ञानके पांच भेद**—मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान, केवलज्ञान

(१६) **अज्ञानके तीन भेद**—मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभगज्ञान,

(१७) **योगके पंदरह भेद**—**मनका** सत्य मनयोग, असत्य म०, मिश्र म०, व्यवहार म०, वचनका–सत्य वचनयोग, असत्य व०, मिश्र व०, व्यवहार व०, **कायाका**–औदारिक काययोग, औदारिक मिश्र का०, वैक्रिय का०, वैक्रिय मिश्र का०, आहारिक का०, आहारिक मिश्र का०, कार्मण का०

(१८) उपयोग के दो भेद—साकार उपयोग, अनाकार उपयोग

(१९) आहारके दो भेद—व्याघातापेक्षा, नो व्याघातापेक्षा

(२०) उत्पात—एक समयमें उत्पन्न होना.

(२१) स्थितिके दो भेद—(१) जघन्य (२) उत्कृष्ट

(२२) मरणके दो भेद—समोइया मरण यान समुद्घात (ताणावेना) करके मरे, असमोइया मरण याने नदुककी गोलीकी माफिक मरे

(२३) चवण—एक समयमें चवना

(२४) गति आगति—गति–मरके जिस गतिमें जावे, अगति–जिस गतिमे आवे इति

उपर लिखे २४ दंडकोपर २४ द्वार उतारे जावेंगे इससे भव्यात्माओंको स्वर्ग मृत्यु और पातालके जीवोंका अच्छा बोध हो जायगा।

चौवीस दंडकोंमे रत्नप्रभादि सात नरकोंका एक दंडक और असुरकुमारादि दश भुवनपतियोंके दश दंडक व्यंतरदेवोंका एक ज्योतिषीदेवोंका एक और वैमानिकदेवोंका एक एवम् १४ दंडकका एक द्वार अर्थात इन्हीं चौदह दंडकोंपर चौवीस द्वार

(१) शरीर–नारकी और देवता अर्थात् १४ दडकोंमें तीन शरीर पावै, वैक्रिय शरीर, तेजस शरीर, कार्मण शरीर

(२) अवगाहना–१४ दडकमें भवधारिणी जघन्य अगुलके असख्यातमें भाग और उत्तर वैक्रिय जघन्य अगुलके सख्यातमें भाग और दोनोंकी उत्कृष्ट यत्र द्वारा लिखते हैं

स्थान	अवगाहना भवधारणी		उत्तर वैक्रय
रत्नप्रभानरक	७॥ धनुष	६ अगुल	भवधारणीसे दुगुणी समझना
शर्कर प्रभा	१५॥ ,,	१२ ,,	,,
वालुका प्रभा	३१। ,,	० ०	,,
पकप्रभा	६२॥ ,,	० ०	,,
धूम्रप्रभा	१२५ ,,	० ०	,,
तमप्रभा	२५० ,,	० ०	,,
तमतमा प्रभा	५०० ,,	० ०	,,

१० भुवनपति, व्यतर, ज्योतिषी, और वैमानिकमें

पहिला, दूसरा, देवलोककि अव०	७	हाथ
तीसरे, चौथे ,,	६	,,
पाचमे छट्ठे ,,	५	,,
सातमे आठमे ,,	४	,,
नवमे दसमे इग्यारमे बारमें ,,	३	,,
नवग्रैवेयक ,,	२	,,
चार अणुत्तर विमानके देव	१	,,

सर्वार्थसिद्ध विमानके देव १ हाथ कुच्छ ऊणे

उत्तर वैक्रिय बारमा देवलोक तक है वह लक्ष जोजन साधिक करते है उपर वैक्रिय नहीं है

(३) **सघयण**–१४ दंडकमें नहीं है परन्तु देवताओंमें शुभ और नारकियोंमें अशुभ पुद्गल प्रणमते है

(४) **संस्थान**–नारकियोंमें हुंडक और देवताओंमें समचौरस संस्थान

(५) **सज्ञा**–१४ दंडकमें चारों पावे

(६) **कषाय**–१४ दंडकमें चारों पावे

(७) **लेश्या**–पहिली दूसरी नरकमें एक कापोत लेश्या तीसरी नरकमें दो लेश्या कापोत और नील, चौथी नरकमें नील, पांचमी नरकमें नील और कृष्ण, छठीमें कृष्ण, सातमी नरकमें महा कृष्ण दश भुवनपति और व्यंतर देवताओंमें चार लेश्या कृष्ण, नील, कापोत, तेजस, ज्योतिषी, पहिले दूसरे देवलोक और पहिले किल्विषीमें तेजो लेश्या तीसरे चोथे, पांचमें देवलोक और नवलोकांतिकके देवता तथा दूसरे किल्विषीमें पद्म लेश्या छट्टे देवलोकसे नव ग्रैवेयकके देवताओंमें और तीसरे किल्विषीमें शुक्ल लेश्या है पांचाणुत्तर वैमानमें परम शुक्ल लेश्या है

(८) इन्द्रिय—१४ दंडकमें पाचों इन्द्रियें पावै

(९) समुद्घात—नारकीमें वेदनी, कषाय, मरणांतिक और वैक्रिय यह ४ भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, और बारह देवलोक तक क्रमसे पांच पावे नवग्रैवयक और पांच अणुत्तर विमानके देवताओंमें वेदनी, कषाय, मरणांतिक, तीन समुद्घात पावे वैक्रिय और तेजसकी शक्ति है परंतु करे नहीं

(१०) सज्ञी—१४ दंडकके जीव सज्ञी हैं परंतु प्रथम नरक दश भुवनपति और व्यंतरोंमें आनेकी अपेक्षा सज्ञी असज्ञी दोनों हैं

(११) वेद—नारकीमें नपुंसक, देवता भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, पहिला दूसरा देवलोकमें वेद २ स्त्री वेद, पुरुष वेद, तीसरे देवलोकसे सर्वार्थ सिद्ध विमान तक एक पुरुष वेद है क्योंकि देवीकी उत्पत्ति दूसरे देवलोकसे आगे नहीं है परन्तु जाना आना आठमा देवलोक तक है

(१२) पर्याप्ति—१४ दंडकमें पांच पावे कारण मन और भाषा दोनों एक साथमें ही होती हैं

(१३) दृष्टि—नारकी, भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, और बारह देवलोक तक तीन पावे नवग्रैवेयकमें दो पावे सम्यग् दृष्टि, मिथ्या दृष्टि पांच अणुत्तर विमानमें एक सम्यग्दृष्टि है

(१४) **दर्शन**—१४ दंडकमें तीन दर्शन पावे चक्षुद० अचक्षुद० अवधिद०

(१५) **ज्ञान**—१४ दंडकमें तीन पावे मति ज्ञान, श्रुति ज्ञान, अवधि ज्ञान,

(१६) **अज्ञान**—नारकी देवता यावत् नवग्रैवेयक तक तीनों पावे, पांच अणुत्तर विमानमें अज्ञान नहीं है

(१७) **योग**—१४ दंडकमें योग ११ पावे चार मनका, चार वचनका, तीन कायाका वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र, और कार्मण

(१८) **उपयोग**—१४ दंडकमें दोनों पावे

(१९) **आहार**—१३ दंडक त्रसनालीमें होनसे निर्व्याघात–छे दिशाका आहार २८८ बोलोंका लेते हैं

(२०) **उत्पन्न**—नारकी, भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, और आठमें देवलोक तक के जीव एक समयमें १–२–३ यावत् असंख्याता उत्पन्न होते हैं नवमें देवलोकसे सर्वार्थसिद्ध विमानके देव एक समयमें १–२–३ यावत् संख्याता उत्पन्न होते हैं

(२१) **स्थिति**—यंत्र द्वारा नीचे

मार्गणा	जघन्य	उत्कृष्ट
रत्नप्रभा नरक	१०००० वर्ष	१ सागरोपम
शर्करप्रभा	१ सागरोपम	३ ..

वालुकाप्रभा	३ ,,	७ ,,
पङ्कप्रभा	७ ,,	१० ,,
धूम्रप्रभा	१० ,,	१७ ,,
तमप्रभा	१७ ,,	२२ ,,
तमतमाप्रभा	२२ ,	३३ ,,

दस भुवनपतियोंके २० इन्द्र हैं जिनमें दस इन्द्रोंकी राजधानी दक्षिण दिशिके तर्फ है और दस इन्द्रोंकी राजधानी उत्तर दिशिके तर्फ है। प्रथम असुरकुमारके दो इन्द्र हैं चमरेन्द्रकी राजधानी दक्षिण और बलेन्द्रकी राजधानी उत्तर

देवता	जघन्य	उत्कृष्ट
चमरेन्द्रके देव	१०००० वर्ष	१ सागरोपम
,, देवी	,,	४॥ पल्योपम
नागादि नव इन्द्र (दक्षण)	,,	१॥ ,,
,, देवी	,,	०॥। ,,
बलेन्द्रके देव	,,	१ सागरोपम साधिक
,, देवी	,,	४॥ पल्योपम
नागादि नव इन्द्र (उत्तर)	,,	२ पल्योपम कुछ कम
,, देवी	,,	१ ,, ,,
परमाधामी		१ पल्योपम

व्यंतरदेव	,,	१ पल्योपम
,, देवी	,,	०॥ पल्योपम
चद्रविमानके देव	०। पल्योपम	१ पल्योपम १ लक्षवर्ष
,, देवी	,,	०॥ ,, ५०००० वर्ष
सूर्यविमानके देव	,,	१ ,, १००० ,,
,, देवी	,,	०॥ पल्यो पम
ग्रह विमानके देव	,,	१ पल्योपम
,, देवी	,,	०॥ ,,
नक्षत्र विमानके देव	,,	०॥ ,,
,, देवी	,,	०। ,, साधिक
तारा विमानके देव	१/८ प०	०। पल्योपम
,, देवी	१/८ ,,	१/८ ,, साधिक
प्रथम देवलोकके देव	१ पल्यो०	२ सागरोपम
परिग्रहीता देवी	१ ,,	७ पल्योपम
अपरिग्रहीतादेवी	,,	५० ,,
दूसरे देवलोकके देव	१ ,, साधिक	२ सागरोपम सा०
परिग्रहीता देवी	,,	९ पल्योपम
अपरिग्रहीता देवी	,,	५५ ,,
पहेला किल्विषी		३ ,,

तीसरे देवलोकके देव	४	सागरोपम	७	सागरोपम
चौथे देवलोक	,,	साधिक	,,	साधिक
दूसरे किल्विषी			३	सागरोपम
पाचमे देवलोक	७	सागरोपम	१०	,,
नवलोकातिकके देव			८	,,
छठे देवलोक	१०	सागरोपम	१४	,
तीसरे क्रिल्विषी			१३	,,
सातमे देवलोक	१४	सागरोपम	१७	,,
आठमे देवलोक	१७	,,	१८	,,
नवमे देवलोक	१८	,,	१९	,,
दसमे देवलोक	१९	,,	२०	,,
इग्यारमे देवलोक	२०	,,	२१	,,
बारमे देवलोक	२१	,,	२२	,,
प्रथम त्रिक	२२	,,	२५	,,
दूसरी त्रिक	२५	,,	२८	,,
तीसरी त्रिक	२८	,,	३१	,,
चार अणुत्तर वि०	३१	,,	३३	,,
सर्वार्थ सिद्ध	३३	,,	३३	,,

(२२) **मरण**—१४ दडकमें दोनों प्रकारसे मरते है

(२३) चवन—नारकीसे आठमें देवलोक तक एक समय में १-२-३ यावत् असख्याता चवे, नवमें देवलोकसे सर्वार्थ सिद्ध तक १-२-३ यावत सख्याता चवे.

(२४) गति आगति—पहिली नरकसे छठी नरक और तीसरे देवलोकसे आठमें देवलोक तक दोगतिका आवे और दो गतिमें जावे, दडकापेक्षा दो दडकका आवे और दो दडकमें जावे तिर्यञ्च पचेंद्रि और मनुष्य। सातमी नरकमें दो गतिका आवे (तिर्यञ्च और मनुष्य) एक गतिमें जावे (तिर्यञ्चमें) दडका पेक्षा दो दटकका आवे और एक दटकमे जावे गतिवत्

१० भुवनपति, व्यतर, ज्योतिषी, पहिले दूसरे देवलोकके देवता दो गतिसे आवे और दो गतिमें जावे (तिर्यञ्च और मनुष्य) दडकापेक्षा दो दडकका आवे (तिर्यञ्च, मनुष्य) और पाच दडकमें जावे पृथ्वी, पाणी, वनस्पति, तिर्यञ्च पचेन्द्री, और मनुष्य। नवमें देवलोकसे सर्वार्थ सिद्ध विमानके देवता एक गतिसे आवे और एक गतिमें जावे दटकापेक्षा एक दडकमे आवे और एक दडकमें जावे मनुष्य इति द्वारम्

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पति काय, और असज्ञी मनुष्यका द्वार.

(१) **शरीर**—वायुकायमें शरीर चार शेष चार स्थावर और असज्ञी मनुष्यमें शरीर तीन पावे औदारिक, तेजस, और कार्मण वायुकायमें वैक्रिय अधिक

(२) **अवगाहना**—वनस्पतिकायकी जघन्य अगुलके असख्यातमे भाग और उत्कृष्ट १००० जोजन कुछ अधिक शेष चार स्थावर असज्ञी मनुष्यकीजघन्य उत्कृष्ट अगुलके असख्यातमे भाग

(३) **सघयण**—सर्वमें एक छेवठो

(४) **सस्थान**—सबमें एक हुडक

(५) **सज्ञा**—सबमें चार

(६) **कषाय**—सबमें चार

(७) **लेश्या**—पृथ्वी पाणी वनस्पतिमें चार–कृष्ण, नील कापोत, तेजस और तेउ वायु आसज्ञी मनुष्यमें लेश्या ३ पावे-कृष्ण, नील, कापोत

(८) **इन्द्रिय**—पाच स्थावरमें एक स्पर्शेन्द्रिय, असज्ञी मनुष्यमें पाचों इन्द्रिय पावे

(९) **समुद्घात**—वायुकायमें ४ शेष चार स्थावर असज्ञी मनुष्यमें ३ वेदनी कषाय, मरणान्तिक, वायुकायमें वैक्रिय समुद्घात अधिक

(१०) **सज्ञी**—सब असज्ञी हे

(११) वेद—सबमें नपुसक वेद है

(१२) पर्याप्ति—पाच स्थावरमें ४ आहार पर्याप्ति, शरीर प०, इन्द्रिय प०, श्वासोश्वास प०, असज्ञी मनुष्यमें श्वास लेवे तो उश्वास नहीं लेवे क्योंकि चार पर्याप्तिमें कुछ कम पूर्व ही मरण होता है

(१३) दृष्टि—सबमें एक मिथ्यादृष्टी

(१४) दर्शन—पाच स्थावरमें एक अचक्षुद०, असज्ञी मनुष्यमें दो चक्षुद० अचक्षु दर्शन,

(१५) ज्ञान—सबमें ज्ञान नहीं है

(१६) अज्ञान—सबमें मति अज्ञान, श्रुति अज्ञान,

(१७) योग—वायुकायमें ५ शेष बोलोंमें ३ औदारिक, औदारिक मिश्र, और कार्मण वायुकायमें वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र अधिक

(१८) उपयोग-सबमें २ साकार, अणाकार,

(१९) आहार—असज्ञी मनुष्य नियमा छहों दिशाका और पाच स्थावरमें व्याघातापेक्षा स्यात् ३–४–५ दिशा और निर्व्याघातापेक्षा नियमा छहों दिशामें १८८वोलका आहार लेवै

(२०) उत्पात—एक समयमें १–२–३ यावत् असख्याता जीव उत्पन्न होते हैं परन्तु वनस्पति कायमें अनन्ते भी होते हैं।

(२१) **स्थिति**—जघन्य सबकी अन्तरमूहूर्त और उत्कृष्ट

पृथ्वीकाय	२२००० वर्ष
अप्काय	७००० ,,
तेउकाय	तीन दिन
वायुकाय	३००० वर्ष
वनस्पतिकाय	१०००० ,,
असन्नी मनुष्य	अन्तर मुहुर्त

(२२) **मरण**—दोनों प्रकारसे मरते हैं

(२३) **चवन**—एक समयमें १-२-३ यावत् असंख्याता परन्तु वनस्पतिमें अनन्ता भी चवते हैं

[२४] **गति आगति**—पृथ्वी पाणी वनस्पतिमें तीन गति और तेवीस दंडकका आवे नारकी वर्जके, गति अपेक्षा दो गति (मनुष्य तिर्यंच) और दस दंडक (पांच स्थावर तीनविकलेंद्री तिर्यंचपंचेंद्रिय और मनुष्य) में जावे। तेउ वायु दो गति और दस दंडक (पूर्ववत्)का आवे, तथा एक गति (तिर्यंचकी) और नव दंडकमें जावे मनुष्य वर्जके अर्थात् तेउ वायुका निकला मनुष्य नहीं होता है। असन्नी मनुष्य दो गति (मनुष्य तिर्यंच) और आठ दंडक (पृथ्वी पाणी वनस्पति तीन विकलेंद्री तिर्यंच मनुष्य)का आवे तथा दो गति (म० ति०) और

स दडकमें जावै पाच स्थावर तीन विकले द्री तिर्यञ्च और मनुष्य
ति द्वारम्

तीन विकलेन्द्री और असञ्ज्ञी तिर्यञ्चोंका द्वार.

बेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चौरेन्द्रिय, जलचर, थलचर, खेचर, उर
रिसर्प, भुजपरिसर्प यह आठों असञ्ज्ञी मन रहित है

(१) **शरीर**—ऊपरके आठ बोलेमें शरीर तीन पावै
ौदारिक, तेजस कार्मण

(२) **अवगाहना**—जघन्य सबकी अगुलके असख्यातमें
ाग और उत्कृष्ट

बेन्द्रियकी १२ योजन

तेन्द्रियकी ३ कोष { चार हाथका एक धनुष और दो हजार
चौरेन्द्रिकी ४ कोष } धनुष्यका एक कोष होता है

जलचर १००० योजन

थलचर प्रत्येक कोष { दो कोषसे नव कोष तकको प्रत्येक
खेचर प्रत्येक धनुष } कोष कहते है इसी तरह प्रत्येक
उर परिसर्प प्रत्येक योजन } योजन और प्रत्येक धनुषको समझो
भुजपरिसर्प प्रत्येक धनुष

(३) **सघयण**—सबमें एक छेवट्टो

(४) **सस्थान**—सबमें एक हुडक

(५) **संज्ञा**—सबमें चार पावे

(६) **कषाय**—सबमें चार पावे

(७) **लेश्या**—सबमें तीन कृष्ण, नील, कापोत

(८) **इन्द्रिय**—बेन्द्रियमें दो स्पर्शेन्द्रिय, रसेन्द्रिय। तेन्द्रियमें तीन घ्राणेन्द्रिय, अधिक। चौरेन्द्रिमें चार नेत्रेन्द्रिय अधिक। पचेन्द्रियमें पाच इन्द्रियें पावे

(९) **समुद्घात**—सर्वमें तीन वेदनी, कषाय, मरणान्तिक

(१०) **सज्ञी**—सर्व असज्ञी है

(११) **वेद**—सर्वमें नपुसक वेद है

(१२) **पर्याप्ति**—सर्वमें पाच पावे मन प० नहिं पावे

(१३) **द्रष्टि**—सर्वमें दो सम्यग्द्रष्टि, मिथ्याद्रष्टि

(१४) **दर्शन**—बेन्द्रिय, तेन्द्रियमें अचक्षुद० चौरेन्द्रिय और असन्नी पचेन्द्रियमें दो चक्षु द० अचक्षु द० पावे

(१५) **ज्ञान**—सर्वमें दो मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान, अपर्याप्ताकी अपेक्षा

(१६) **अज्ञान**—सर्वमें दो मति अ० श्रुति अज्ञान

(१७) **योग**—सर्वमें चार औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्मणकाययोग और व्यवहार भाषा

(१८) **उपयोग**—सर्वमें दो साकार, अणाकार

(१९) आहार—नियमा छैदिशिका २८८ बोलका लेवै

(२०) उत्पात—एक समयमें १–२–३ यावत् असंख्याता जीव उत्पन्न होते हैं

(२१) स्थिति—जघन्य सर्वकी अन्तर मुहूर्त्त उत्कृष्ट
बेन्द्रिय १२ वर्ष
तेन्द्रिय ४९ दिन
चौरेन्द्रिय ६ मास
जलचर क्रोड पूर्व वर्ष
थलचर ८४००० वर्ष
खेचर ७२००० वर्ष
उर परिसर्प ५३००० वर्ष
भुज परिसर्प ४२००० वर्ष

(२२) मरण—दोनों प्रकारसे मरे

(२३) चवण—एक समयमें १ २ ३ यावत् असंख्याता चैव.

(२४) गति आगति—तीन विकलेन्द्रीमें दोगति और दस दंडकका आवे और दो गति और दस दंडकमें जावे गति मनुष्य, तिर्यञ्च और दस दंडक पाच स्थावर, तीन विकलेन्द्रि, मनुष्य तिर्यञ्च समझना। असनी तिर्यञ्च दोगति और

दडकका (पूर्ववत) आवे और चारगति और बावीस दडक ज्योतिषी, वैमानिक वर्जके) में जावे इति द्वारम्

सज्ञी तिर्यंच और सज्ञी मनुष्योका द्वार

तिर्यंच जलचरादि पांच प्रकारके है और मनुष्य [१९] कर्मभूमि (३०) अकर्मभूमि (५६) अन्तरद्वीपके है, इनमें अकर्मभूमि और अ तरद्वीपक निवासियोंको युगल मनुष्य कहते है

(१) शरिर—युगल मनुष्योंमें तीन औदारिक, तैजस, कार्मण तिर्यंचोंमें चार वैक्रिय अधिक कर्मभूमिके मनुष्योंमें शरीर पाच आहारिक शरीर अधिक

(२) अवगाहना—जघन्य सबकी अगुलके असख्यातमें भाग उत्कृष्ट

जलचर	१००० योजन
थलचर	६ कोष
खेचर	प्रत्येक धनुष
उर परिसर्प	१००० योजन
भुजपरिसर्प	प्रत्येक कोष
देवकुरु उत्तरकुरु	३ कोष
हरिवास रम्यक्वास	२ ,,
हेमवय ऐरणवय	१ ,,

छप्पन अतरद्वीप ८०० धनुष
महाविदेह ५०० ,,

उत्सर्पिणी	अवसर्पिणी	लागतो०	उतरतो आरो
छट्ठो आरो	पहिलो आरो	३ कोष	२ कोष
पाचमो आरो	दुसरो ,,	२ ,,	१ ,,
चोथो आरो	तीसरो ,	१ ,,	५०० ध
तीसरो आरो	चौथो ,	५०० धनुष	७ हाथ
दुसरो आरो	पाचमो ,,	७ हाथ	१ ,,
पहिलो आरो	छट्ठो ,,	१ ,,	१ उगो

(३) सघयण—युगल मनुष्योंमें एक वज्रऋषभ नाराच शेषमें सघयण छे पावे

(४) सस्थान—युगल मनुष्योंमें एक समचतुरस्र शेषमें छे सस्थान पावे

(५) सज्ञा—सबमें चार पावे

(६) कषाय—सबमें चार पावे

(७) लेश्या युगल मनुष्योंमें चार कृष्ण नील, कापोत, तेजस, शेषमें छे लेश्या पावे

(८) इन्द्रिय—सबमें पाच पावे

(९) समुद्घात—युगल मनुष्योंमें तीन वेदनी, कषाय, मारणांतिक, तिर्यंचोंमें पाच वैक्रिय, तेजस अधिक कर्मभूमि मनुष्यमें [illegible] पावे

(१०) **सज्ञी**—सब सज्ञी है परन्तु ५६ अतर द्वीपोंमें जानेकी अपेक्षा सज्ञी, असज्ञी दोनों पावै

(११) **वेद**—युगल मनुष्योंमें दो स्त्रीवेद, पुरुषवेद शेषमें तीनों पावै

(१२) **पर्याप्ति**—सबमें छे पावै

(१३) **दृष्टि**—छप्पन अतरद्वीपोंके मनुष्योंमें एक मिथ्यात्व तीस अकर्मभूमिमें दो सम्यग्यदृष्टि, मिथ्यादृष्टि, शेषमें तीनों दृष्टि पावै

(१४) **दर्शन**-युगल मनुष्योंमें दो चक्षुदर्शन, अचक्षुदशन तीर्यंचमें तीन अवधि दर्शन अधिक । मनुष्यमें चार केवल दर्शन अधिक ।

(१५) **ज्ञान**—छप्पन अतर द्वीपोंमें ज्ञान नहीं है । तीस अकर्म भूमिमें ज्ञान दो मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान । तिर्यञ्चमे ज्ञान तीन अवधि ज्ञान अधिक । मनुष्यमें पाचो ज्ञान पावै

(१६) **अज्ञान**—युगल मनुष्योंमें दो मति अज्ञान, श्रुति अज्ञान । शेषमें तीनों अज्ञान पावै

(१७) **योग**—युगल मनुष्योंमें ११ चार मनका, चार वचनका, औदारिक, औदारिक मिश्र, और कार्मण। तियञ्चमें १३ वैक्रिय, वैक्रिय मिश्र काय योग अधिक। मनुष्यमें १५ योग पावै

(१८) **उपयोग**—सबमें दो पावै

(१९) आहार–सब नियमा ६ दिशिका आहार २८८ बोलका लेवे

(२०) उत्पन–एक समयमें १–२–३ यावत् संख्याता परंतु तिर्यंच असंख्याता उत्पन्न होते हैं

(२१) स्थिति–जघन्य सर्वकी अन्तर मुहूर्त और उत्कृष्ट

जलचर	क्रोडपूर्व वर्ष
थलचर	३ पल्योपम
खेचर	पल्योपमके असंख्यातमें भाग
उर परिसर्प	क्रोडपूर्व वर्ष
भुजपरिसर्प	,, ,,
देवकुरु उत्तरकुरु	३ पल्योपम
हरीवास रम्यक्वास	२ ,,
हेमवय एरणवय	१ ,,
छप्पन अंतरद्वीप	पल्योपमके असंख्यातमें भाग
महाविदेह	क्रोड पूर्व वर्ष

युगल मनुष्योंके जघन्य अंतर मुहूर्तकी भी स्थिति होती है।

उत्सर्पिणी	अवसर्पिणी	लागते आरे	उतरते आरे
छट्ठो आरो	पहिलो आरो	३ पल्योपम	२ पल्योपम
पांचमो ,,	दूसरो ,,	२ ,,	१ ,,
चोथो ,,	तीसरो ,,	१ ,,	क्रोड पूर्व वर्ष
तीसरो ,,	चोथो ,,	क्रोड	

दूसरो ,,	पाचमो ,,	१२० वर्ष	२० वर्ष
पहिलो ,,	छठ्ठो ,,	२० ,,	१६ ,,

(२२) **मरण**—दोनों प्रकारसे मरते है

(२३) **चवण**—एक समयमें १-२-३ यावत् सख्याता परन्तु तिर्यञ्चमें असख्याता भी चवते है

(२४) **गति आगति**-तिर्यञ्चमें चार गति २४ दडकसे आवे और चार गति २४ दडकमें जावे। तीस अकर्मभूमि दोगतिका (मनुष्यतीर्यंच) आवे। एक गति देवतोंमें जावे। दडकापेक्षा दो दड१ (मनुष्य तिर्यञ्च) का आवे और तेर दडक देवतोंमें जावे। छप्पन अतरद्वीप दो गति दो दडक (मनुष्य तिर्यञ्च) का आवे, और एक गति और ११ दडकमें जावे। गति और दडक देववोंका (दस जातिके भुवनपति, व्यतर,) कर्मभूमि मनुष्य चार गति २२ दडक (तेउकाय वायुकाय छोडकर) का आवे और चार गति २४ दडकमे जावे तथा सिद्ध गतिमें भी जावे इति द्वारम्

सिद्धोका द्वार

पूर्वोक्त २४ द्वारसे सिद्धोंमें केवल ८ द्वार ही पाते है शेष शून्य है इसलिये यहा आठ द्वारकी व्याख्या करते है

(२) **अवगाहना**—सिद्धोंमें अवगाहना नहीं है परन्तु आत्माके प्रदेशोंने आकाशके प्रदेश अवगाह्या है उसापेक्षा

जघन्य—एक हाथ आठ आगुल
मध्यम—चार हाथ सोला आगुल
उत्कृष्ट—तीनसे तेतीस धनुष बत्तीस आगुल
(१३) दृष्टि—एक सम्यग्दृष्टि
(१४) दर्शन—एक केवल दर्शन
(१५) ज्ञान—एक केवल ज्ञान
(१६) उपयोग—दो साकार, अणाकार
(२०) उत्पात—एक समयमें १-२-३ उत्कृष्ट १०८
(२१) स्थिति—एक सिद्ध अपेक्षा आदि है परन्तु अन्त नहीं बहुतसे सिद्ध अपेक्षा आदि नहीं और अन्त भी नहीं है

(२४) आगति—एक मनुष्य गति तथा मनुष्य दंडक की है इति द्वारम्।

सेवभंते, सेवभंते, तमेव सचम्।

थोकडा नम्बर ३

चोवीस दंडकमेंसे कितने दंडक किस स्थान पर मिलते हैं।

प्रश्न	उत्तर
(प्रश्न) एक दंडक किस जगा पावे,	(उ) नारकीमें पावे

(प) दो दंडक ,, (उ) श्रावकमे पावे–२०+२१ मो
(प्र) तीन दंडक ,, (उ) तिनविकलेंद्रियमें पावे–१७+१८+१९
(प्र) चार दंडक ,, (उ) स वर्मे पावे १२+१३+१४+१४ मो
(प्र) पाच दंडक ,, (उ) एकेंद्रियमें, १२+१३+१४+१५+१६
(प) छ दंडक ,, (उ नेजोलेश्याका अलद्धिआमें जैसे जिस दंडक
तेजोलेश्या न मले–१–१४–१५–१७–१८–१९
(प) सात दंडक ,, (उ) वैक्रियका अलद्धिआमें ४ स्थावर ३ वि०
(प) आठ दंडक ,, (उ) असन्नीमें ५ स्थावर ३ वि०
(प) नव दंडक ,, (उ) तिर्यचमें ५ स्थावर ४ त्रस
(प) दश दंडक ,, (उ) भुवनपत्तिमें
(प) अगीआर दंडक,, (उ) नपुंसकमें १० औदारीक १ नारकी
(प्र) बारे दंडक ,, (उ) तीर्च्छा लोकमें १० औदारीक १ व्यन
(प्र) तेर दंडक ,, (उ) देवतामें जोतीर्प
(प्र) चौद दंडक ,, (उ) एकात वैक्रिय शरीरमें १३ दे० १ नार
(प) पदर दंडक ,, (उ) स्त्री वेदमें १३ देवता १ मनु० १ ती
(प्र) सोल दंडक ,, (उ) सन्नीमें तथा मनयोगमें
(प्र) सत्तर दंडक ,, (उ) समुच्च वैक्रिय शरीरमें
(प) अढार दंडक ,, (उ) तेजोलेश्यामें ६ वर्जके
(प) ओगणीस,, ,, (उ) त्रसकायमें–५ स्थावर वर्जके

(प्र) वीस ,, , (उ) जघन्य उत्कृष्ठ अवगहनावाला जीवोंमें
(प्र) एकवीस ,, ,, (उ) नीचा लोकमें २ देवता वर्जके
(प्र) बावीस ,, ,, (उ) कृष्ण लेश्योंमें जोतषी वि० वर्जके
(प्र) तेवीस ,, ,, (उ) भगवानका समोसरणमें १ नारकी,,
(प्र) चोवीस ,, ,, (उ) समुच्चय जीवमें

थोकडा न ४

जीवोंके १४ भेदके प्रश्नोत्तर ।

प्रश्न	उत्तर
१ जीवका एक भेद काहा पावे	केवलीमें
२ ,, दोय ,, ,,	वेइन्द्रियमें
३ ,, तीन ,, ,,	मनुष्यमें
४ ,, चार ,, ,,	एकेन्द्रियमें
५ ,, पांच ,, ,,	भापकमें
६ ,, छे ,, ,,	सम्नग्दृष्टीमें
७ ,, सात ,, ,,	अपर्यात्तामें
८ ,, आठ ,, ,,	अनाहारीकमें
९ ,, नव ,, ,,	एकान्त सरागी त्रसमें
१० ,, दश ,, ,,	त्रस कायमें
११ ,, एग्यारे,, ,,	एकान्त बादर सरागीमें
१२ ,, बारह ,, ,,	बादरमें

१३ ,,	तेरह ,,	१	एकान्त छदमस्तमें
१४ ,,	चौदा ,,	१	सर्व ससारी जीवोंमें

१४ गुणस्थानके प्रश्नोत्तर।

प्रश्न			उत्तर
१५ एक गुणस्थान काहा पावे			मिथ्याती जीवमें
१६ दोय	,,	१–२	बेन्द्रियमें
१७ तीन	,,	१–१२–१३	अमरमें
१८ चार	,,	१–२–३–४	नारकी देवतावोंमें
१९ पाच	,,	क्रम सर	तीर्यंच पाचेन्द्रियमें
२० छे	,,	क्रम सर	प्रमादी जीवोंमें
२१ सात	,,	,,	तेजो लेश्यामें
२२ आठ	,,	,,	हास्यादिकमें
२३ नव	,,	,,	सवेदी जीवोंमें
२४ दश	,,	,,	सरागी जीवोंमें
२५ इग्यारे	,,	,,	मोह कर्मकि सतामें
२६ बारह	,,	,,	छदमस्त जीवोंमें
२७ तेराह	,,	,,	सयोगी जीवोंमें
२८ चौदा	,,	,,	सर्व ससारी जीवोंमें

२९ वाटे वहे तों मे गु० तीन ।१।२।४।

३० अनाहारीक गु० पाच ।१।२।४।१३।१४।

३१ सास्वता गु० पाच ।१।४।५।६।१३।

३१ एकान्त सञ्ज्ञी गु० दश । तीजासे बारहातक ।
३३ असनी गु० दोय ।१।२
३४ नोसनी नोअसञ्ज्ञी गु० दोय ।१३।१४।
३५ सम्यग्दृष्टीमें गु० बारह । पहिलो तीजो वर्जके ।
३६ साधुमें गु० नव-छठासे चौदमा तक ।
३७ श्रावकमें गु० एक पाचमो
३८ अप्रमादिमें गु० आठ सातमासे चौदमा ।
३९ वीतरागमें गु० चार ।११।१२।१३।१४

थोकडा न० ५

१८ योगोका प्रश्नोत्तर

प्रश्न		उत्तर
१ एक योग कीम्मे पावे	?	बाटे नेहतामीवमें—कार्माण
२ दोय योग ,,	?	बेंद्रियका पर्यातामें
३ तीन योग ,,	?	पृथ्वीकायमें
४ चार योग ,,	?	चौरिंद्रियमें
५ पाच योग ,,	?	वायुकायमें
६ छे योग ,,	?	असञ्ज्ञी जीवोंमे
७ सात योग ,,	?	केवलीतेरहवें गु० में

८ आठ योग „ ? पाचेन्द्रिय अपर्याप्ता अनाहारीकके अन्त *
९ नव योग „ ? नव गुणस्थानमें । *क्रियामें
१० दश योग „ ? तीजा मिश्र गुण स्थानमें
११ इग्यारे योग „ ? देवतावोंमें
१२ बारह „ „ ? पाचमें गु० श्राव।में
१३ तेरह „ „ ? तीर्यंचपाचेन्द्रिमें
१४ चौदा „ „ ? आहारीक जीवोंमें
१५ पन्दरा „ „ ? सर्व समारी जीवोंमें

१२ उपयोगका प्रश्नोत्तरो ।

१६ एक उपयोग ? साकर उपयोगमें सिद्ध होते समय
१७ दो „ ? केवली भगवानमें
१८ तीन „ ? एकेन्द्रिय जीवोमें
१९ चार „ ? असन्नी मनुष्यमें
२० पाच „ ? नेन्द्रि जीवोंमें
२१ छे „ ? मिथ्याती जीवामें
२२ सात „ ? छद्मस्त साधुमें
२३ आठ „ ? अचरम जीवोंमें
२४ नव „ ? देवतावोंमें
२५ दश „ ? छदमस्तजीवोंमें

१६ इग्यारा, ? नोमेंजमें
१७ बारह,, ? सर्व जीवोंमें

थोकडा न० ६
छे लेश्याका प्रश्नोत्तर।

प्रश्न	उत्तर
१ एक लेश्या ?	अनुत्तर वेमानका देवतावोंमें
२ दोय लेश्या ?	तीजीनरकमें
३ तीन लेश्या ?	वेन्द्रिय जीवोंमें
४ चार लेश्या ?	युगल मनुष्योंमें
५ पाच लेश्या ?	तीर्थंकरों कि आगतिमें
६ छे लेश्या ?	समुचय जीवोंमें
७ एकली कृष्ण ?	सातमिनारकीमें
८ ,, निल० ?	चोथी नरकमें
९ ,, कापोत० ?	पहिली ,,
१० ,, तेजस० ?	ज्योतीषी देवोंमें
११ ,, पद्म० ?	पाचमा देवलोकके देवोंमें
१२ ,, शुक्ल० ?	सर्वार्थसिद्धके देवोंमें
१३ ,, कृष्ण० निल० ?	पाचमी नरकमें
१४ ,, कृष्ण० कापोत० ?	नारकीके चरमा तमे

८ आठ योग ,, ? पंचेन्द्रिय अपर्याप्ता अनाहारीकके अन्*
९ नव योग ,, ? नव गुणस्थानमें । *द्विमार्में
१० दश योग ,, ? तीजा मिश्र गुण स्थानमें
११ इग्यारे योग ,, ? देवतावोंमें
१२ बारह ,, ,, ? पांचमें गु० श्राव।में
१३ तेरह ,, ,, ? तीर्यंचपांचेन्द्रिमें
१४ चौदा ,, ,, ? आहारीक जीवोंमें
१५ पन्दरा , ,, ? सर्व ससारी जीवोंमें

१२ उपयोगका प्रश्नोत्तर।

१६ एक उपयोग ? साकर उपयोगमें सिद्ध होते समय
१७ दो ,, ? केवली भगवान्में
१८ तीन ,, ? एकेन्द्रिय जीवोंमें
१९ च्यार ,, ? असज्ञी मनुष्यमें
२० पांच , ? नेन्द्रि जीवोंमें
२१ छे ,, ? मिथ्याती जीवोंमें
२२ सात ,, ? छद्मस्त साधुमें
२३ आठ ,, ? अचरम जीवोंमें
२४ नव ,, ? देवतावोंमें
२५ दश ,, ? छद्मस्तजीवोंमें

२६ ग्यारा,, ? जोयेमनमें
२७ बारह,, ? सर्व जीवोंमें

थोकडा न० ६
छे लेश्याका प्रश्नोत्तर।

प्रश्न　　　　उत्तर
१ एक लेश्या ? अनुत्तर वैमानका देवतावोंमें
२ दोय लेश्या ? तीनीनारकमें
३ तीन लेश्या ? बेन्द्रिय जीवोंमें
४ चार लेश्या ? युगल मनुष्योंमें
५ पाच लेश्या ? तीर्थंकरों कि आगतिमें
६ छे लेश्या ? समुचय जीवोंमें
७ एकली कृष्ण ? सातमिनारकीमें
८ ,, निल० ? चोथी नरकमें
९ ,, कापोत० ? पहिली ,,
१० ,, तेजस० ? ज्योतीषी देवोंमें
११ ,, पद्म० ? पाचमा देवलकके देवोंमें
१२ ,, शुक्ल० ? सर्वार्थसिद्धके देवोंमें
१३ ,, कृष्ण० निल० ? पांचमी नरकमें
१४ ,, कृष्ण० कापोत० ? नारकीके चरमा तमे

१५ कृष्ण० तेजस० ? लक्ष वर्षका देवनावोंमें
१६ ,, पद्म० ? परिव्रामक कि गतिका
१७ ,, शुक्ल० ? उत्कृष्ट स्थितिमें
१८ निल० कापोत० ? तीजी नारकीमें
१९ ,, तेजस० ? पल्योपमके असंख्यात भाग कि

२० ,, पद्म० ? दश सागरोपमकि स्थितिमें।
२१ ,, शुक्ल० ? दश सागरोपम और
रव्यातमें भाग अधिक
२२ कापोत० तेजस०? दोयसागरोपमकि स्थितिमें
२३ ,, पद्म ? तीनसागरोपमकि स्थितिमें
२४ ,, शुक्ल ? वासुदेवकि आगतिका
२५ तेजस० पद्म ? वैम
२६ तेजस० शुक्ल० ? वैमानिक देवोंका चरमान्तमें।
२७ पद्म० ,, ? वैमानिकके एक वेदवालोंमें
२८ निल० कापोत० तेजस० पद्म० ? प्रत्येक
२९ कृष्ण० निल० कापोत, तेजस, पद्म० ? पांचवा
३० कापोत० तेजस० पद्म० शुक्ल० ? वासुदेवकि
३१ कृष्ण० निल० कापोत० तेजस० शुक्ल० सर्वार्थ

सेवंभते सेवंभते तमेव सचम्